32 PAGES ANSWER BOOK

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठी

विषय Subject: हिन्दी

विषय कोड Subject Code: 051

परीक्षा की दिनांक / Date of Exam: 020323

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering the paper: हिन्दी

प्रश्न पत्र का सेट Set of the Question paper: D

गोले भरने हेतु उदाहरण :–
सही तरीका :–
● ○ ○ ○
गलत तरीका :–
⊗ ⊘ ○ ◐ ◉ ○

नोट :–
इस शीट को भरने के पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए गए उदाहरण को देखें।

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
कुल प्राप्तांक		

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
इन्द्र पाराशर	

कार्यालय उपयोग के लिए

ID NO. 6098208
SUB. 051 - HINDI
4
Bag. 10511546

② योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 2 के अंक =

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 1

1 उ० (i) (स) पैसे की ।

(ii) (अ) दत्ता जी राव के यहाँ ।

(iii) (ब) नास्तिक ।

(iv) (स) शब्दालंकार ।

(v) (अ) चार कालों में ।

(vi) (द) कपड़े पहनाती है ।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 2

2. उ०

(i) नौ वर्ष की उम्र ।

(ii) भूषण ।

(iii) कागज के पन्ने से ।

(iv) सरल वाक्य ।

(v) बिड़ला मन्दिर ।

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

न क्र.

(vi) मात्रिक ।

(vii) लेखक ।

प्रश्नोत्तर क्रमांक – 3

3. उ.

(i) चित्रकार → (घ) चितेरा

(ii) सम्पादकीय पृष्ठ → (अ) अखबार की अपनी आवाज़

(iii) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग → (द) भक्तिकाल

(iv) छायावाद के प्रवर्तक कवि → (स) जयशंकर प्रसाद

(v) मस्ती का सन्देश → (ई) हरिवंशराय बच्चन

(vi) चौपाई छन्द → (इ) 16 मात्राएँ

B S E

प्रश्नोत्तर क्रमांक – 4

4. उ.

(i) जयशंकर प्रसाद ।

(ii) लाल खड़िया या चाक ।

(iii) दोहा ।

(iv) मुहावरा ।

(v) संवाद के माध्यम से ।

(vi) खजूर और अंगूर ।

(vii) लुट्टन पहलवान की ढोलक की आवाज़ ।

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 5

5.

उ० (i) असत्य ।

(ii) सत्य ।

(iii) सत्य ।

(iv) असत्य ।

(v) सत्य ।

(vi) सत्य ।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 6

6\. उ० जेब के भरे होने और मन के खाली होने पर व्यक्ति बाजार की लुभावनी वस्तुओं के प्रति आकर्षित होता है तब उसे लगता है कि यह भी ले लूँ और वह भी ले लूँ । इस मनोदशा के कारण वह आवश्यक वस्तुओं की अपेक्षा अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने लगता है।

कुल अंक

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक – 7

7 उ० शिरीष का पेड़ वसंत ऋतु में खिलना शुरू होता है लेकिन वह तब तक खिलता रहता जब तक कि ज्येष्ठ माह में पृथ्वी निर्धूम अग्निकुण्ड बनी होती है। यदि उसका मन रम जाता है तो आषाढ़ भादों तक खिलता रहता है। ग्रीष्म ऋतु में प्राण उबलने लगे लगते हैं, लू से हृदय सूखने लगता है तब शिरीष का पेड़ कालजयी (अवधूत) की भाँति जीवन की ~~अजेयतक~~ अजेयता का मंत्र प्रचार करता रहता है।

B
S
E

प्रश्नोत्तर क्रमांक – 8

अथवा

8 उ० विशेषताएँ :– मोहनजोदड़ो के घरों की निम्न विशेषताएँ थीं–

(i) मोहनजोदड़ो में सड़क के दोनों ओर घर बने हुए हैं किन्तु घरों की पीठ मुख्य सड़क की ओर होती थी।

मोहनजोदड़ो के मकान पंक्तिबद्ध बने हुए थे तथा ये छोटे व बड़े दोनों प्रकार के थे।

मध्यप्रदेश
कुल अंक
MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 9

9. उ० नए और अप्रत्यासित विषयों के लेखन से छात्रों में निम्न गुण विकासित होते हैं:-

(i) ...ों में मौलिक अभिव्यक्ति का गुण विकासित होता है।

(ii) भाषा पर छात्रों की पकड़ मजबूत होती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 10

B

10. उ० वीर रस

S

E

परिभाषा:- सहृदय के हृदय में स्थित "उत्साह" नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग करता है तो वह "वीर रस" का रूप ग्रहण कर लेता है।

उदाहरण:- हे सारथे ! है द्रोण क्या, देवेन्द्र भी आकर अड़े,
है खेल क्षत्रिय बालकों का, व्यूह भेदन कर लड़े।
मैं सत्य कहता हूँ सखे, सुकुमार मत जानो मुझे,
...मराज से भी युद्ध को, प्रस्तुत सदा मानो मुझे ॥

(7)

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 11

अथवा

11 उ. लक्षणा शब्द-शक्ति :-

परिभाषा :- इसमें शब्दों का लाक्षणिक प्रयोग किया जाता है। को
वाला किसी प्रयोजन या लक्ष्य का आधार लेकर इस प्रका
के शब्दों का प्रयोग करता है कि उसका शाब्दिक अर्थ ए
प्रकार का होता है और छिपा हुआ अर्थ भिन्न प्रकार का होता है

उदाहरण :- गोलू उल्लू है।
यहाँ "उल्लू" शब्द "मूर्खता" का द्योतक है।

BSE

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 12

अथवा

12 उ. विशेषताएँ :- राष्ट्रभाषा की विशेषताएँ निम्न है :-

(i) राष्ट्रभाषा सम्पूर्ण राष्ट्र की सम्पर्क भाषा होती है तथा अनिवार्य रूप से पूरे राष्ट्र में अपनायी जाती है।

(ii) राष्ट्रभाषा का साहित्य समृद्ध एवं व्यापक होता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 13

13 उ.

(i) शुद्ध वाक्य :- मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

(ii) शुद्ध वाक्य :- जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 14

14.

उ० कवि ने अपने खेत में "शब्द रूपी" बीज बोया है तथा उसे कल्पना की खाद देकर रचना रूपी फसल मिली थी।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 15

अथवा

15.

उ० लक्ष्मण मेघनाद द्वारा छोड़ी हुई शक्ति से मूर्छित हो गए तो उनके लिए संजीवनी बूटी लाने हनुमान जी गए थे।

B

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 16

अथवा

16.

उ०

(क) शीर्षक :- हास्य - व्यंग्य।

(ख) नीरस जीवन को हास्य-व्यंग्य सुखद बनाता है।

(ग) सार :- हास्य - व्यंग्य एक ऐसा माध्यम है जो नीरस जीवन को सुखद बनाता है। जिसने कभी हँसना नहीं सीखा उसने जीना भी नहीं सीखा। मनुष्य को बड़ी - बड़ी मुसीबतों में भी हँसते रहना चाहिए। संघर्ष, तनाव तथा घुटन से खुद को बचाने के लिए हमें हँसना सीखना होगा तभी हमारा जीवन जीने योग्य बन पाएगा।

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 17
अथवा

17. उ० जी काव्यगत परिचय :- कविवर तुलसीदास ।

(i) रचनाएँ :- श्री रामचरितमानस , गीतावली , दोहावली , कवितावली विनय पत्रिका , बरवै रामायण , वैराग्य संदीपनी आदि।

(ii) (अ) भावपक्ष :- तुलसीदास जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ है। भाषा में अवधी एवं ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। मुख्य रूप से अवधी का प्रयोग हुआ। लोकमंगल की कामना तुलसी के काव्य का आधार रही है, इसके लिए उन्होंने काव्य शास्त्र को माध्यम बना हिन्दी साहित्य को श्रेष्ठ रचनाएँ प्रदान की हैं।

(ब) कलापक्ष :- कविवर तुलसीदास तत्कालीन समय में कवि के साथ-साथ समाज-सुधारक भी माने गये हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में ब्रज भाषा के साथ-साथ अरबी एवं फारसी का प्रयोग किया किन्तु मुख्य रूप से अवधी का प्रयोग हुआ है। इन्होंने प्रबंध शैली, गीति शैली तथा छप्पय शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। उपमा , रूपक , संदेह , भ्रांतिमान आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। इनकी रचनाओं में दोहा, सोरठा तथा छप्पय छंद का सुंदर प्रयोग हुआ।

(iii) साहित्य में स्थान :- हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में आप सुविख्यात हैं। आपकी हिन्दी साहित्य को अनूठी देन युगों-युगों तक अमर रहेगी।

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 18

अथवा

18.

उ० * साहित्यिक परिचय *

लेखक : धर्मवीर भारती

(i) रचनाएँ :- कनुप्रिया , ठंडा लोहा , बंद गली का आखिरी मकान, गुनाहों का देवता , सूरज का सातवाँ घोड़ा , मुर्दों का गाँव, ठेले पर हिमालय।

(ii) भाषा - शैली :→ भारती जी ने निबंध और रिपोर्ताज भी लिखे हैं इनके गद्य में सहजता व आत्मीयता है। बड़ी से बड़ी बात को बातचीत की शैली में कहते हैं और सीधे पाठकों के मन को छू लेते हैं। इनकी भाषा साहित्यिक , रोचक और सरस है जिसमें तत्सम , तद्भव व विदेशी शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। मुहावरों के प्रयोग ने भाषा-शिल्प को सुघड़ता और प्रवाह प्रदान किया है। इन्होंने हिन्दी पत्रिका धर्मयुग के सम्पादक रहते हुए हिन्दी पत्रकारिता को सजा-सवाँरकर गंभीर पत्रकारिता का एक मानक बनाया।

(iii) साहित्य में स्थान :- " गुनाहों का देवता " उपन्यास से लोकप्रिय " धर्मवीर भारती " का स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के साहित्यकारों में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने कवि , उपन्यासकार , निबंधकार तथा कहानीकार के रूप में हिन्दी को अमूल्य रचनाएँ दीं। हिन्दी साहित्य में उनका प्रमुख स्थान है।

(11)

योग

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 19

19.

उ॰ भाव विस्तार

"जननी" और "जन्मभूमि" स्वर्ग से महान हैं।

"जननी" और "जन्मभूमि" स्वर्ग से महान हैं। जननी अर्थात् जन्म देने वाली माँ। जननी केवल हमें जन्म ही नहीं देती बल्कि हमारा पालन-पोषण भी करती है। जननी हमें अच्छे-बुरे ज्ञान कराती है। हमारी पहली गुरू जननी ही होती है। जननी बचपन में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन का मार्ग सरल करती है। उसी प्रकार जन्मभूमि भी हम सबकी जन्मदात्री होती है, हमें ज्ञान देती है। अतः हमें अपनी जन्मभूमि की रक्षा करना चाहिए। क्योंकि इस जन्मभूमि पर देवी-देवताओं ने जन्म लेकर पान किया है। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि "जननी" और "जन्मभूमि" स्वर्ग से महान हैं।

प्रश्न क्र.

प्रश्नोत्तर क्रमांक – 20

20

उ०

– निबंध लेखन –

विद्यार्थी और अनुशासन

रूपरेखा :–

प्रस्तावना,

(i) अनुशासन से आशय,

(ii) अनुशासन के प्रकार,

(iii) विद्यार्थी और अनुशासन,

(iv) उपसंहार।

(v)

(i) प्रस्तावना :– मानव-जीवन सांसारिक नियमों से बंधा हुआ है, इन नियमों का पूर्णरूपेण पालन करना ही अनुशासन कहलाता है। विद्यार्थी-जीवन भी शैशव, शैक्षणिक तथा सांसारिक नियमों से बँधा हुआ है। अतः अनुशासन की इस जीवन में महती आवश्यकता है।

MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

न क्र.

(ii) अनुशासन से आशय :- विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व निर्विवाद है। अनुशासन सफलता की कुंजी है। अनुशासन जीवन को ऊँचा उठाने का मूल-मंत्र है। अनुशासन विद्यार्थी को माता-पिता, गुरुजी तथा अन्य पूज्य लोगों का स्नेह प्रदान करता है। यह स्नेह विद्यार्थी के जीवन का विकास करता है।

(iii) अनुशासन के प्रकार :- अनुशासन दो प्रकार का होता है - आंतरिक तथा बाह्य। बाह्य अनुशासन या तो भय पर आधारित होता या लोभ पर। ऐसा अनुशासन स्थायी नहीं होता है। दूसरे प्रकार का अनुशासन है आंतरिक। इसे आत्मानुशासन या आत्म शांति-नियंत्रण भी कहा जा सकता है। आत्मानुशासित व्यक्ति अपने मन, शरीर तथा बुद्धि पर पूर्ण रूप से नियंत्रण स्थापित कर लेता है जिसने अपने को जीत लिया उसने दुनिया को जीत लिया।

(iv) विद्यार्थी और अनुशासन :- विद्यार्थी जीवन, जीवन का उषाकाल है यह वह समय है जिसमें जीवन की नींव तैयार होती हैं। इस समय बालक जो सीखता है, जो ग्रहण करता है तथा जो क्षमता प्राप्त करता है वह उसके जीवन की पूँजी बन जाती है। इस पूँजी का लाभ वह जीवन भर उठाता है। अनुशासन के द्वारा अनेक गुणों का विकास होता है। नियमित रूप से कार्य करने की क्षमता का उदय होता है विद्यार्थी जीवन को सुयोग्य बनाने में अनुशासन का महत्वपूर्ण स्थान है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(V) उपसंहार :- वर्तमान में विद्यार्थी को चाहिए कि राजनीति के मार्ग से हटकर अध्ययन के मार्ग पर आएँ। अनुशासित विद्यार्थी के लिए जीवन के समस्त द्वार खुल जाते हैं। उसका सभी भरोसा करते हैं। उसे जिम्मेदारी सौंपने में किसी को सोच - विचार नहीं करना पड़ता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 21

उ०

संकेत :- सबसे तेज - - - - - - - - - - - - - - झुंड को।

(i) संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य - पुस्तक "आरोह भाग - 2" के में संकलित कविता प्रसंग "पतंग" से ली लिया गया है जिसके रचयिता "आलोक धन्वा" हैं।

(ii) प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए सुन्दर वर्णन किया है।

(iii) व्याख्या :- कवि कहता है कि सब ऋतु मौसम के अनुसार आती हैं। कवि ने कहा कि वे वर्षा ऋतु में आने वाली तेज बौछारें गईं, भादो बीत गया और अब शरद ऋतु का आगमन हो रहा है। कवि शरद ऋतु का मानवीकरण करते हुए कहता है कि शरद ऋतु अपनी चमकीली साइकिल

MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

को तेजी से चलाते हुए, घंटी बजाते हुए आ रही है। शरद ऋतु के आने पर बच्चे पतंग उड़ाते हैं। शरद ऋतु के आगमन से बच्चों में उत्साह, उमंग भर जाता है और वह रंगी - बिरंगी पतंगे उड़ाने लगते हैं।

काव्य सौन्दर्य :-

(iv)

(1) जो "जोर - जोर" से में पुनरुक्त शब्द युग्म तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(2) शरद ऋतु का मानवीकरण किया गया है।

(3) "खरगोश की आँखों जैसा लाल" में उपमा अलंकार है।

(4) खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

B
S
E

उ०

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 22

अथवा

संकेत :- पैसा पावर - - - - - - - - - - - - - का रस है।

(i) संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक "आरोह भाग-2" के अंतर्गत गद्य खंड के अंतर्गत "बाजार दर्शन" नामक निबंध से लिया गया है जिसके रचयिता "जैनेन्द्र कुमार" हैं।

(ii) प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में पैसे का पावर कहा गया है। "पर्चेजिंग पावर" की शक्ति को बताया गया है।

EDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL

प्रश्न क्र.

(iii) व्याख्या :- लेखक ने कहा है कि पैसा पावर है। इसमें "पर्चेजिंग पावर" का अर्थ है - खरीदने की शक्ति या आर्थिक सम्पन्नता। इस पावर के आधार पर रहन - सहन, खान-पान आदि में उच्च जीवन स्तर व्यतीत करने का प्रयास किया जाता है। इसे बैंक - खाते, मकान - कोठी, जमीन - जायदाद आदि के माध्यम से देखा जा सकता है किन्तु कभी-कभी लोग इसका सदुपयोग करने की अपेक्षा दुरूपयोग भी करने लगते हैं। वे आपसी होड़ और दिखावे के कारण अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने लगते हैं।

(iv) विशेष :-
(1) पैसे की पावर का दर्शाया गया है।
(2) "आस - पास" तथा "माल - टाल" में सार्थक - निरर्थक शब्द युग्म है।
(3) व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
(4) भाषा सरल, सहज व भावानुकूल है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

उ०

प्रश्नोत्तर क्रमांक - 23

पत्र - लेखन

ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु

प्रति,
जिलाधीश महोदय,
जिला :- मुरैना (म.प्र.)

विषय :- ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध लगाने हेतु।

महोदय,
सविनय निवेदन है कि हम सब छात्र - छात्राएँ ध्वनि विस्तारक यंत्रों के से हो रहे शोर से परेशान हैं। जैसा कि आपको विदित है कि माध्यमिक शिक्षामण्डल की परीक्षाओं समय अति निकट है किंतु सड़कों तथा गली - मोहल्ले में बजाए जा रहे ध्वनि विस्तारक के कारण पढ़ना मुश्किल हो गया है। दुकानों, विभिन्न सभाओं तथा धार्मिक कार्यक्रमों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों को निर्बाध रूप से बजाया जा रहा है। इस शोर-गुल के कारण हमें पढ़ाई करने में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है तथा सो नहीं पा रहे हैं।

BSE

प्रश्न क्र.

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी दण्डात्मक शक्तियों का प्रयोग करते हुए ध्वनि विस्तारक यंत्रो के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाने की कृपा करें। आशा है आप छात्र हित में आवश्यक एवं उचित कदम उठाने का प्रयास करेंगे।

सधन्यवाद!

दिनांक: 2-03-23

प्रार्थिनी

श्रद्धा एवं समस्त छात्र-छात्राएँ।

BSE